IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

धर्म, विज्ञान एवं बौद्ध दर्शन

NARENDRA KUMAR SONKAR
RESEARCH SCHOLAR (U.G.C.-J.R.F)
DEPARTMENT OF PHILOSPHY
LUCKNOW UNIVERSITY, LUCKNOW

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रपत्र ''धर्म व विज्ञान की अवधारणा'' तथा बौद्ध धर्म एवं दर्शन में उसकी स्वीकार्यता एवं अस्वीकार्यता को स्पष्ट करने के उद्देश्य से लिखा गया है। इस लेख में मैने सर्वप्रथम धर्म की अवधारणा व उसकी विशेषताओं को स्पष्ट किया है। फिर मैने बौद्ध दर्शन में धर्म सम्बंधी अवधारणा के समावेशन को स्पष्ट किया है। बौद्ध धर्म के कुछ मूल सिद्धांतों, जिसमें आष्टांगिक मार्ग के कुछ अंग, पंचशील, चार ब्रह्म विहार छः पारमिताओं का स्पष्टीकरण किया गया है। ''धर्म'' में निहित कुछ मान्यतायें जैसे– ईश्वरवाद, आत्मा की अमरता, चमत्कार व अलौकिक सत्ता में विश्वास आदि का स्पष्टीकरण ''बौध धर्म व दर्शन'' में धर्म सम्बंधी अवधारणा के अस्वीकार्यता के संदर्भ में किया गया है। इन पक्षों की चर्चा के बाद फिर मैंने लेख में विज्ञान की विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए ''बौद्ध दर्शन'' में विज्ञान की अवधारणा के समर्थन से सम्बंधित तथ्यों को स्पष्ट किया गया है।

मुख्य शब्द–

आष्टांगिक मार्ग, सम्यक वाक्, सम्यक कर्मान्त, आजीविका, ब्रह्म विहार, सद्गुण, पंचशील, धम्म, पारमिता, क्षणभंगुरवाद।

साहित्यावलोकन–

प्रस्तुत शोध–पत्र, बौद्ध दर्शन में ''धर्म एवं विज्ञान'' की कुछ मान्यताओं की स्वीकार्यता व अस्वीकार्यता को स्पष्ट करता है। इस शोध प्रपत्र को प्रस्तुत करने के लिए मैने ''धम्मपद'' (श्री कछेन्द्री लाल गुप्त, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, पंचम संस्करण, 1997) को अध्ययन का मुख्य आधार बनाया है। इसके साथ ही मैने विज्ञान की कुछ विशेषताओं का अध्ययन इण्टरनेट

से प्राप्त सामाग्री के माध्यम से किया। अध्ययन करने के पश्चात मेरी अभिरूचि ''धर्म व विज्ञान'' का ''बौद्ध दर्शन'' मे समावेशन को लेकर उत्पन्न हुयी, जिसके कारण मैं इस विषय पर शोध पत्र लिखने के लिए प्रेरित हुआ। इसके अतिरिक्त ''बौद्ध दर्शन'' (राहुल सांकृत्यायन, किताब–महल, इलाहाबाद 1944) जैसी पुस्तक को भी इस शोध प्रपत्र को प्रस्तुत करने के संदर्भ में सहायता ली गयी है।

शोध प्रपत्र का उद्देश्य–

प्रस्तुत शोध प्रपत्र को प्रस्तुत करने का मेरा उद्देश्य ''बौद्ध धर्म व दर्शन'' में विज्ञान एवं धर्म की मान्यताओं के समर्थन एवं असमर्थन के बिंदुओं को स्पष्ट करना है।

भूमिका–

साधारण शब्दों में धर्म का तात्पर्य कर्तव्य, अहिंसा, न्याय, सदाचरण, सदगुण, आदि के मूल्यों को धारण करने के अर्थ मे लिया जाता है। धर्म एक संस्कृत शब्द है। यह संस्कृत के 'धृ' धातु से मिलकर बना है अर्थात जो धारण करने योग्य है वही ''धर्म'' है। इसे संस्कृति में कहा गया है। ''धारयति इति धर्मः। कहने का यहॉ तात्पर्य यह है कि जिन शाश्वत् सत्य नियमों को धारण करते है उन्हें धर्म कहा गया है एवं धर्म से ही प्रजा की धारणा होती है।'' अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि ये धारण करने योग्य क्या है? इसके उत्तर में सभी धर्मों से एक सार निकलता है कि ऐसे मूल्यों एवं नियमों को धारण करो जिसे सार्वभौम रूप से स्वीकार किया जा सके। जैसे ''कर्म'' में लगे रहना धर्म है अर्थात कर्म में लगे रहना धारण करने योग्य है उदारता धर्म है, सत्य धर्म है, दया धर्म है। क्योंकि ये सभी धारण करने योग्य है।

यहां यह भी प्रश्न उत्पन्न होता है कि ये धारण करने योग्य क्यों है? इसके प्रति उत्तर में कहा जा सकता है कि यदि हम सत्य, क्षमा, दया, करूणा आदि को धारण न करके असत्य, क्रोध, क्रूरता को धारण करें तो इससे निःसंदेह समाज पर बुरा प्रभाव पडेगा क्यों कि इससे कोई किसी की मद्द नहीं करेगा एवं झूठ व असत्य का बोल बाला होगा तथा समाज में अज्ञानता फैलेगी। अतः कुल मिलाकर धर्म के संदर्भ में ये कहा जा सकता है कि जिन नैतिक मूल्यों से स्वंय एवं समाज की उन्नति के साथ सौर्वभौमिता के नियम से बांधा जा सके, वहीं धर्म है। धर्म में पूरी तरह नैतिक मूल्यों का तथा नैतिकता का पालन होता है। डॉ0 राधाकृष्णन ने धर्म को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''धर्म की अवधारणा के अन्तर्गत हिन्दू उन स्वरूपों और प्रक्रियाओं को लाते है जो मानव जीवन का निर्माण करती है और उसको धारण करती है।'' दुर्खीम के मतानुसार, ''धर्म पवित्र वस्तुओं से सम्बंधित आचरणों की समग्रता

है जो इन पर विश्वास करने वालों को एक नैतिक समुदायों के रूप में संयुक्त करती है।'' धर्म की कुछ निम्नलिखित विशेषतए हैं।

– धर्म में पवित्रता का तत्व विद्यमान होता है।

– धर्म किसी एक दिव्य, अलौकिक शक्ति में विश्वास करता है। (अवतारवाद की अवधाराणा में विश्वास)

– धर्म के माध्यम से मनुष्य तथा दैवीय व अलौकिक शक्तियों के मध्य संबंध स्थापित किये जाते है। प्रत्येक धर्म में कुछ निश्चित प्रतिमान होते है एवं यही प्रतिमान ईश्वरीय रक्षा का प्रतिनिधित्व करते है व्यक्ति इन प्रतिमानों का आदर करने के साथ–साथ अपने व्यवहार का निर्धारण भी करता है।

उपर्युक्त धर्म संबंधी अवधारणा के संदर्भ में अम्बेडकर जी का भी कथन है कि **''अब धर्म का यही अर्थ हो गया है और अब धर्म का यही भावार्थ ग्रहण किया जाता है– ईश्वर में विश्वास, ईश्वर की पूजा, आत्मा में विश्वास, आत्मा की पूजा, आत्मा का सुधार, प्रार्थना आदि करके ईश्वर को प्रसन्न रखना है''।**[1]

बौद्ध दर्शन में ''धर्म'' की अवधारणा

अब यहां पर उपर्युक्त मतों का अवलोकन करने पर हमारे समक्ष एक सवाल उत्पन्न होता है कि क्या ''धर्म'' की अवधारणा का पूर्णतः समावेश बौद्ध धर्म या दर्शन में किया जा सकता है? इस प्रश्न के संदर्भ में कुछ बौद्ध सिद्धांतों पर प्रकाश डालना होगा। यदि हम बौद्ध दर्शन के कुछ सिद्धांतों का अध्ययन करें तो हम पाते हैं कि बौद्ध धर्म में ''धर्म'' से सम्बंधित कुछ मान्यताओं का पूर्णतः समावेश हुआ है। बौद्ध दर्शन में सत्यता, अहिंसा, करूणा, दया, प्रेम, सहिष्णुता, क्षमा आदि जैसे मूल्यों का व्यक्ति को पूर्णतः पालन करने का निर्देश दिया गया है। बौद्ध दर्शन के आष्टांगिक मार्ग का तृतीय अंग सम्यक वाक् मनुष्य को संकल्प के द्वारा वाणी पर नियंत्रण रखने को कहा गया है, हमेशा सत्य वचन ही बोलें। इसका पालन मनसा, वाचा, कर्मणा तीनों प्रकार से किया जाना चाहिए। इस संदर्भ में डॉ0 धर्मानन्द कौसम्बी की मान्यता है कि **''असत्य भाषण, चुगली, वृथा, बक–बक आदि अक्षत वाणी के कारण समाज का संगठन बिगड जाता है।**[2]

इसी तरह आष्टांगिक मार्ग के चतुर्थ व पंचम अंग क्रमशः सम्यक् कर्मान्त व आजीविका में भी मनुष्य को हमेशा ही अच्छे नैतिक कर्मों एवं मूल्यों को धारण करने पर बल

दिया गया है। चोरी, हत्या, व्याभिचार, नशावर्जन आदि जैसे अनैतिक कार्यों का पूर्णतः त्याग करना ही सम्यक् कर्मान्त है। सम्यक आजीविका के उपासको को बुद्ध ने 5 बातों का निषेध बतलाया है **''हथियार का व्यापार, प्राणी का व्यापार, मांस का व्यापार, मद्य का व्यापार, विष का व्यापार।''**[3] यहॉ स्पष्ट है कि आष्टांगिक मार्ग के इन अंगों में ''धर्म'' की कुछ मान्यताओं का पूर्णतः पालन हो रहा है।

आष्टांगिक मार्ग के अलावा बौद्ध दर्शन में वर्णित चार ब्रह्म विहारों के पालन से भी ''नैतिकता'' व धर्म ''का संरक्षण होता है ये चार ब्रह्म विहार है– मैत्री, करूणा, मुदिता उपेक्षा। मैत्री ब्रह्म विहार सभी प्राणियों से प्रेम करने की शिक्षा देता है। इस संदर्भ में बौद्ध चिंतन परम्परा में यह संकेत मिलता है कि **''मैं सुखी होऊॅ, दुख से मुक्त होऊॅ, मैं वैमनस्य और चिंता से मुक्त होकर सुख पूर्वक रहूॅ, इसके बाद व्यक्ति के प्रति और अंत में कोई दुश्मन हो तो उसके प्रति मैत्री भावना का अभ्यास करना चाहिए।**[4] इसी प्रकार करूणा ब्रह्म विहार के द्वारा समाज के प्रति अनुकम्पा तथा समता के आर्दशों को स्थापित किया गया है। मुदिता एक सहानुभति आनन्द है, यह दूसरों के प्रति प्रसन्नता का अनुभव कराती है। ''मुदिता'' भावना में दूसरों के प्रति द्वेष, ईर्ष्या आदि जैसी भावना का पूर्णतः अंत हो जाता है। ब्रह्म विहार के अंतिम अंग उपेक्षा का पालन करने से प्रिय–अप्रिय का भेद पूरी तरह समाप्त हो जाता है। इस प्रकार बौद्ध दर्शन में वर्णित चार ब्रह्म विहारों के पालन से भी ''धर्म'' की अवधारणा का संरक्षण होता है। चार ब्रह्म विहरों के अलावा बौद्ध दर्शन के प्रमुख नैतिक सिद्धांत ''पंचशील'' से भी ''नैतिकता व धर्म'' का पालन होता है। यह पंचशील है– सत्य, अहिंसा, अचौर्य, ब्रहमचर्य एवं नशावर्जन। इन सभी नैतिक मूल्यों का समावेश तो सीधे–सीधे धर्म की अवधारणा मे की गयी है। इसके अतिरिक्त बौद्ध दर्शन में साधकों के पालन हेतु बतलाये गये छः पारमिताओं दान, शील, क्षान्ति, वीर्य, ध्यान व प्रज्ञा से भी ''धर्म'' की अवधारणा परिलक्षित होती है।

उपर्युक्त मतों का अवलोकन करने पर बौद्ध दर्शन में ''धर्म'' की उपस्थिति को स्वीकार करने में तो कोई आपित्त नहीं है लेकिन धर्म से सम्बंधित कुछ विशेषताओं की अनुपस्थिति भी बौद्ध धर्म व दर्शन में परिलक्षित होती है। इसमें सर्वप्रथम आपत्ति ईश्वर को लेकर है जहां अन्य धर्मों में ''ईश्वर की सत्ता'' को स्वीकार किया गया है। ईश्वर को सृष्टि का कर्ता, संचालक एवं संहारकर्ता माना जाता है, वहीं बौद्ध धर्म में अनीश्वरवाद की विचारधारा को स्वीकार किया गया है। इस संदर्भ में आचार्य ''वसुबन्धु'' कहते हैं कि **''ईश्वर सर्वजगत का एक कारण नहीं है।**

पुनः जिन कारणों से ईश्वर की अपेक्षा होती है उनका भी क्रम सम्भव नहीं है क्योंकि जिन कारणों की न्याय दार्शनिक अपेक्षा करते है व स्वयं कारणान्तरों की अपेक्षा करते है।''[5] ईश्वर की सत्ता को अस्वीकार करने के साथ ही बौद्ध धर्म व दर्शन में नित्य एवं स्थाई आत्मा की सत्ता का भी पूर्णतः निषेध किया गया है। जहां धर्मों की मान्यता में आत्मा के स्थायीत्व को स्वीकार किया गया है महात्मा गौतम बुद्ध जी ने आत्मा का निषेध करते हुए मज्झिम निकाय में कहा है कि **''भिक्षुओं रूप अनित्य है, वेदना, संज्ञा, संस्कार, विज्ञान, रूप आत्मा नहीं है। वेदना, संज्ञा, संस्कार, विज्ञान, सारे धर्म (पदार्थ) अनात्मा है।''**[6] इसके अतिरिक्त बौद्ध दर्शन दिव्य सत्ता में विश्वास, चमत्कार तथा अवतारवाद जैसी अवधारणा को भी पूरी तरह नकारता है जब कि अन्य धर्मों में इन मान्यताओं को भी प्रमुख स्थान दिया गया है।

अब यहां यह तथ्य भी महत्वपूर्ण है कि क्या विज्ञान की अवधारणा भी बौद्ध दर्शन में परिलक्षित होती है इस पक्ष के स्पष्टीकरण के पूर्व हमें विज्ञान क्या है? पहले हमें इसे समझना होगा। विज्ञान शब्द लैटिन भाषा का शब्द ''Scientia'' से मिलकर बना है जिसका तात्पर्य विशेष ज्ञान है। वस्तुतः घटनाओं के कारणों की खोज ने ही विज्ञान को जन्म दिया। विज्ञान का सम्बंध किसी घटना विशेष के कारण तथा परिणाम के पारस्परिक संबंध के ज्ञान का व्यवस्थित या क्रमबद्ध अध्ययन से है। विज्ञान सत्य की खोज से भी संबंधित है। विज्ञान को परिभाषित करते हुए महान वैज्ञानिक आंइस्टीन ने कहा है कि ''हमारी ज्ञान अनुभूतियों की अस्त–व्यस्त विभिन्नता को तर्कपूर्ण विचार प्रणाली बनाने के प्रयास को विज्ञान कहते हैं। एनसाइक्लोपिडिया ब्रिटेनिका के अनुसार ''विज्ञान नैसर्गिक घटनाओं और उनके बीच संबंधों का सुव्यवस्थित ज्ञान है।'' वैसे तो विज्ञान अपने अन्दर बहुत सी विशेषताएं धारण करता है, लेकिन कुछ प्रतिमान विज्ञान की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है ये निम्नवत् है–

– विज्ञान की मुख्य आधारशिला कारण–कार्य सम्बंध पर आधारित है। विज्ञान सम्बंधित घटना में विद्यमान कारकों तथा तथ्यों के परस्पर कार्य–कारण सम्बंधों का अध्ययन, वर्णन और व्याख्या करता है। अतः कारणता की खोज करना विज्ञान की एक प्रमुख विशेषता है।

– विज्ञान मुख्यतः तार्किकता पर आधारित होता है। विज्ञान किसी घटना का तर्कपूर्ण प्रस्तुतीकरण है, वैज्ञानिक पद्धति में तथ्यों के परस्पर सम्बंध को वह तार्किक रूप से सिद्ध करके वर्णन एवं व्याख्या करता है।

– विज्ञान के अध्ययन द्वारा प्राप्त परिणामो में सत्यनिष्ठता पायी जाती है। विज्ञान में शोधों द्वारा प्राप्त परिणामो को सत्यनिष्ठ रूप से स्वीकार्य किया जाता है, इसमें कोई बाह्य

आवरण, जैसे आस्था, श्रद्धा आदि का समावेश नहीं किया जाता। विज्ञान के परिणाम पूरी तरह निष्पक्ष, पूर्वाग्रह मुक्त तथा वस्तुनिष्ठता पर आधारित होता है।

विज्ञान के बहुतायत विशेषताओं में उपर्युक्त विशेषता विज्ञान की मुख्य आधारशिला हैं। अब यहाँ प्रश्न उत्पन्न होता है कि विज्ञान की अवधारणा का बौद्ध दर्शन से क्या सम्बन्ध हो सकता है। इसे समझनें के लिए हमें कुछ बौद्ध सिद्धांतों पर दृष्टिपात करना होगा। यदि हम महात्मा गौतम बुद्ध द्वारा दुखों के निवारण हेतु चतुर्थ आर्य सत्य में बतलाये गये आष्टांगिक मार्ग के प्रथम अंग सम्यक् दृष्टि पर विचार करें तो हम पाते है कि सम्यक् दृष्टि का तात्पर्य है जो चीज जैसी है, उसे उसी रूप में स्वीकार करना चाहिए। यहाँ कहने का तात्पर्य यह है कि असत् को सत् एवं सत् को असत् नहीं समझना चाहिए। विज्ञान भी इस तथ्य को पूरी तरह स्वीकार करता है क्योंकि विज्ञान में प्राप्त होने वाले परिणाम सत्यनिष्ठता पर आधारित होते है। आस्था, श्रद्धा आदि के आधार पर किसी परिणाम या घटना को स्वीकार्य नहीं करता। बौद्ध दर्शन में आष्टांगिक मार्ग का प्रथम अंग सम्यक् दृष्टि भी इसका पूरी तरह अनुशरण करता है।

बुद्ध जी ने अपने द्वितीय आर्य सत्य में प्रतीत्य समुत्पाद को प्रस्तुत किया है। संसार में प्रत्येक कार्य के पीछे कारण विद्यमान है, यह नियम शाश्वत है कि कारण के बिना कार्य की उत्पत्ति सम्भव नहीं है। अभिधर्म कोश में प्रतीत्य समुत्पाद शब्द का अर्थ है **"प्रति का अर्थ है प्राप्ति, इधातु गत्यर्थक है किन्तु उपसर्ग धातु के अर्थ को विपरिणत करता है। इसलिए प्रति–ई का अर्थ "प्राप्ति" है, प्रतीत्य का अर्थ "प्राप्त कर है, पद् धातु सत्तार्थक है, सम+इत् उपसर्ग पूर्वक इसका अर्थ "प्रादुर्भाव" है। अतः प्रतीव्य समुत्पाद=प्राप्त होकर प्रादुर्भाव है।**[7]

आधुनिक विज्ञान की मुख्य आधारशिला भी कारण–कार्य सम्बंध पर निर्भर करता है। विज्ञान भी किसी कार्य की उत्पत्ति के पीछे कारणों की खोज करता है, विज्ञान बिना कारण के किसी की उत्पत्ति को सम्भव नहीं मानता है। कारणता की खोज करना विज्ञान की मुख्य विशेषता एवं आवश्यकता है। अभी तक विज्ञान द्वारा खोजे गये सभी नियम, सिद्धान्त, कारणता सिद्धान्त की ही देन कहा जा सकता है। अतः आधुनिक विज्ञान कारणता सिद्धान्त की आधार शिला पर टिका हुआ है। इस कारणता सिद्धान्त की झलक हमें बौद्ध दर्शन के द्वितीय आर्य सत्य में भी परिलक्षित होती है।

बौद्ध दर्शन का क्षणिकवाद सिद्धान्त एक ऐसा दार्शनिक सिद्धान्त है जिसके अनुसार जगत की समस्त वस्तुए क्षणिक एवं अस्तित्ववान है तथा परिवर्तन ही उसका स्वभाव है। जगत की भौतिक, मानसिक, बाह्य तथा आन्तरिक आदि प्रत्येक वस्तु क्षण–क्षण बदल रही है। इस सिद्धान्त की मूल मान्यता है कि प्रत्येक वस्तु परिवर्तनशील है। बौद्ध दर्शन की मूल अवधारणा है कि **''जो कुछ हमें दिखाई देता है, वह निरन्तर परिणति अथवा निर्माण ही क्रिया मात्र है।**[8] बौद्ध दर्शन के क्षणिकवाद का लक्षण आधुनिक विज्ञान की अवधारणा में दिखाई देती है। विज्ञान भी परिवर्तन को सत्य मानती है, हम अपने व्यवहारिक जगत में भी देखते हैं कि विभिन्न वस्तुए, पेड़–पौधे, जीव–जन्तु, मनुष्य आदि सभी अपने पहले की अवस्था से निश्चित रूप से परिवर्तन आता है और अन्त में ये सभी नष्ट प्राय भी हो जाते है। बौद्ध दर्शन के क्षणिकवाद तथा विज्ञान में अन्तर सिर्फ इतना कहा जा सकता है कि जहॉ क्षणिकवाद वस्तुओं में प्रतिक्षण व त्वरित परिवर्तन को स्वीकार करता है वहीं आधुनिक विज्ञान दीर्घ अवस्था तथा समय में किसी वस्तु में परिवर्तन का समर्थन करता है।

भगवान बुद्ध परम्परागत अन्धविश्वास व मान्यताओं की तीखी आलोचना करते हुए ईश्वर का अस्तित्व जैसी अवधारणा को भी अस्वीकृत करते हैं। जहां अन्य दार्शनिक एवं विचारक ईश्वर को जगत का निर्मित कारण, आदि कारण, सृष्टिकर्ता मानते है वहीं बौद्ध दर्शन ईश्वर सम्बंधी इस अवधारणा का पूरी तरह खण्डन करता है। ईश्वर सम्बंधी बौद्ध मत का आधुनिक विज्ञान भी समर्थन करता है। विज्ञान ईश्वर को नकारता है, परन्तु विज्ञान में भी किसी का व्यक्तिगत मत पृथक हो सकता है। विज्ञान साधारणतः वैसी चीजों को स्वीकार करता है जिसे प्रयोग व परीक्षण से कहीं भी प्रमाणित कर सके। यह तर्क एवं प्रयोगों पर आधारित विश्व की वास्तविक, क्रमबद्ध ज्ञान है। ईश्वर, विज्ञान की इन अपेक्षाओं से परे है। इसलिए विज्ञान भगवान के अस्तित्व को नहीं मानता है।

शोध प्रविधि – प्रस्तुत शोध प्रपत्र विश्लेषणात्मक दृष्टि से लिखा गया है। इस लेख को लिखने में कुछ बौद्ध दर्शन से सम्बंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों तथा प्रकाशित ग्रन्थ एवं इन्टरनेट से प्राप्त सामग्री की सहायता ली गयी है।

निष्कर्ष– उपर्युक्त मतों का अध्ययन करने पर बौद्ध दर्शन के संदर्भ में यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि बौद्ध धर्म में धर्म सम्बंधी सभी विशेषताओं का पूर्णतः समावेश नहीं किया गया है, फिर भी ''धर्म'' के सन्दर्भ में कुछ महत्वपूर्ण मूल्यों व नैतिक कर्तव्यों तथा आचार

मीमांसा का पालन बौद्ध धर्म में निश्चित रूप से किया गया है। यह तथ्य बौद्ध सिद्धांतों जिसमें आष्टांगिक मार्ग के कुछ अंग, चार ब्रह्म विहार, पंचशील, छः पारमिताएं आदि में परिलक्षित, होती है। लेकिन 'धर्म' से सम्बंधित कुछ विशेषताएं जैसे ईश्वर का अस्तित्व, आत्मा की अमरता, अवतारवाद एवं चमत्कारिक व अलौकिक सत्ता में विश्वास आदि को बौद्ध धर्म एवं दर्शन में स्वीकार नहीं किया गया है। इसलिए भगवान बुद्ध ने धर्म से अलग हटकर बौद्ध धर्म को 'बौद्ध धम्म' की संज्ञा दी है– डॉ0 अम्बेडकर जी का कथन है कि **''भगवान बुद्ध जिसे धम्म कहते है वह 'धर्म' से सर्वथा भिन्न है''।**[9] यहाँ डॉ0 अम्बेडकर का मानना है कि **''धम्म का मतलब है सदाचरण, जिसका मबलब है जीवन के सभी क्षेत्रों में एक आदमी का दूसरे आदमी के प्रति व्यवहार।''**[10]

धर्म सम्बंधी मान्यताओं के अलावा बौद्ध धर्म में विज्ञान की अवधारणा का समावेश भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। बौद्ध दर्शन जिस प्रकार कारण–कार्य सम्बंध, क्षणिकवाद, आस्था व श्रद्धा को त्याग कर सत्यनिष्ठा पर आधारित ज्ञान, अनीश्वरवाद आदि की व्याख्या करता है। आधुनिक विज्ञान भी इन सभी मान्यताओं का पूरी तरह समर्थन करता है हाँला कि विज्ञान की कुछ मान्यताएं, जिसमें प्रयोगशाला व निरीक्षण की विधि, पुनर्जन्म का अस्वीकार्य करना, आगमन की विधि आदि बौद्ध धर्म व दर्शन में परिलक्षित नहीं होता। इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते है कि बौद्ध धर्म व दर्शन में ''धर्म व विज्ञान'' की कुछ मौलिक विशेषताओं को प्रमुख स्थान दिया गया है। यही विशेषता बौद्ध दर्शन को अनूठा बनाती है।

संदर्भ–

1. बुद्ध और उनका धम्म, पृ0सं0–204, डॉ0 भीमराव अम्बेडकर सिद्धार्थ बुक्स, 2007

2. भगवान बुद्ध जीवन एवं दर्शन, डॉ0 धर्मानन्द कोसम्बी, पृ0–132 एवं बौद्ध दर्शन (डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद शाक्य) पृ0–25 मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

3. दर्शन दिग्दर्शन, राहुल सांकृत्यापन, पृ0–507 (अनुदित अगुत्तर निकाय) एवं बौद्ध दर्शन (डॉ0 राजेश प्रसाद शाक्य) पृ0सं0–87 मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

4. विशुद्धि मार्ग की रूपरेखा, डॉ0 भिक्षु धर्म रत्न, पृ0–67 एवं बौद्ध दर्शन (डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद शाक्य) पृ0सं0 87, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

5. अभिधर्म कोश, भाग एक, अनु0 आचार्य नरेन्द्र देव पृ0–237 एवं बौद्ध दर्शन (डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद शाक्य) पृ0सं0–4, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

6. मज्झिम निकाय, अनु0 राहुल सांकृत्यापन, 1/4/5, पृ–140 एवं बौद्ध दर्शन (डॉ0 रोजेन्द्र प्रसाद शाक्य) पृ सं0–30

7. अभिधर्म कोश, भाग–1 वसुबन्धुकृत, अनु0 आचार्य नरेन्द्र देव पृ0–318 एवं बौद्ध दर्शन (डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद शाक्य) पृ–27, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

8. परामर्श हिन्दी, खण्ड 5, अंक–1, दिसम्बर 1983 पृ0–38 एवं बौद्ध दर्शन (डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद शाक्य) पृ0 सं0– 33, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

9. बुद्ध और उनका धम्म– डॉ0 भीमराव अम्बेडकर पृ0–204, सिद्वार्थ बुक्स, 2007

10. बुद्ध और उनका धम्म– डॉ0 भीमराव अम्बेडकर पृ0–205, सिद्वार्थ बुक्स, 2007

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation